International Journal of Jyotish Research: 2024; 9(2): 120-122

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2024; 9(2): 120-122
© 2024 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 15-08-2024
Accepted: 22-09-2024

प्रशांत भागवतकर
श्री महर्षि वैदिक ज्योतिष कॉलेज, अरिहंत प्लाजा, उदयपोल, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
प्रशांत भागवतकर
श्री महर्षि वैदिक ज्योतिष कॉलेज, अरिहंत प्लाजा, उदयपोल, उदयपुर, राजस्थान, भारत

जन्म कुंडली में संपत्ती लाभ

प्रशांत भागवतकर

सारांश
आज के दौर में हर व्यक्ति चाहता है कि उसके पास एक अच्छी गाड़ी, घर, बंगला, जमीन-जायदाद, पैसा और सभी सुख-सुविधाएं हों और यह उसका सपना भी होता है। लेकिन ये हर किसी के लिए संभव नहीं होता है। कुछ लोग अपने जिवन में बड़ी आसानी से अपने सपनों के घर का निर्माण कर लेते है, वही कुछ लोग ऐसे भी होते है जो बहुत प्रयासों और संघर्षो के बाद भी अपना घर बनाने में सफल नहीं हो पाते। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी होते है जिन्हें अपने बापदादाओं - का घर, मकान विरासत में मिल जाता है उन्हें खुद से अपना घर बनाने की जरुरत ही नहीं पड़ती, और कुछ लोग ऐसे भी होते है जिन्हें बहुत सी संपत्ति विरासत में तो मिलती ही है, इसके अलावा वह अपनी खुद की संपत्ति, घर-मकान का भी निर्माण कर लेते है। ऐसा क्यों होता है? इस का जवाब यदी ढुंडना है तो हम यह कह सकते है की, यह सब यूं ही नहीं होता है इसके पीछे ग्रहों का खेल होता है। वास्तु का ज्योतिष के साथ गहरा रिश्ता है। ज्योतिष शास्त्र की माने तो मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का पूरा प्रभाव होता है और वही वास्तु शास्त्र में इन ग्रहों की स्थितियों का पूरा ध्यान रखा जाता है।

कूटशब्दः ज्योतिष शास्त्र, वास्तु शास्त्र, जन्म कंडली, ग्रह, दशा, दिशा, भाव, योग, आदी

प्रस्तावना
आज की दुनिया विज्ञान का युग है, हर शास्त्र समय-समय पर नये-नये शोध करते रहती है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में मनुष्य को वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। वास्तु और ज्योतिष दोनों ही शास्त्र ग्रहों और ब्रह्माण्डीय उर्जाओं का मनुष्यों पर पड़ने वाले शुभ-अशुभ प्रभावों का अध्ययन करते है| मनुष्य की कुंडली उसके जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, उसके व्यक्तित्व, जीवन में होने वाले संघर्ष या जिंदगी की गुणवत्ता के सम्बन्ध में पूर्वसुचना प्रदान करती है तो वही निवास के लिए निर्मित भवन की संरचना भी व्यक्ति के जीवन के उतार-चढाव, सफलता और असफलता इत्यादि के बारे में जानकारी प्रदान करती है | दोनों ही ऐसी प्राचीन विद्यायें है जहाँ समस्याओं का तो पता लगता ही है वही इनके समाधान के लिए सर्वोत्तम उपाय भी बताती है | ज्योतिष और वास्तु दोनों का प्रभाव एक-दुसरे पर स्पष्ट देखा जा सकता है| उदाहरण के लिए ज्योतिष में एक व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह कमजोर होंगे वास्तु के सिद्धांतों के अनुसार उन ग्रहों से शासित दिशाओं के निर्माण में वास्तु दोष निर्मित हो जायेंगे | ठीक उसी प्रकार से वास्तु अनुसार निर्मित भवन व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ परिणाम तो देगा लेकिन वे परिणाम साधारणतया उस व्यक्ति की कुंडली में लिखित

संभावनाओं से ज्यादा नहीं मिल पाएंगे जब तक कि कुछ उपाय नहीं अपनाये जाये |अतः दोनों विद्याओं को परस्पर एक-दुसरे का पूरक माना जा सकता है | दोनों ही शास्त्रों में विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए अपने-अपने तरीके से ब्रह्माण्डीय उर्जाओं के नकारात्मक प्रवाह को सकारात्मक प्रवाह में परिवर्तित किया जाता है। वास्तु शास्त्र का उपयोग करने से पूर्व ज्योतिष को भी ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक होता है। वास्तु में ज्योतिष का विशेष स्थान इसलिए है क्योंकि ज्योतिष के अभाव में ग्रहों के प्रकोप से हम बच नहीं सकते हैं, एक तरह से वास्तु और ज्योतिष का चोली-दामन का साथ है। हमारे ग्रहों की स्थिति क्या है? हमें उनके प्रकोप से बचने के लिए क्या उपाय करने चाहिए? हमारा पहनावा, आभूषण, घर की दीवारें, वाहन आदि का आकार और रंग कैसा होना चाहिए इसका ज्ञान हमें ज्योतिष तथा वास्तु के द्वारा ही हो सकता है।

किसी व्यक्ति के जन्म के समय उसकी ग्रह स्थिति का मानचित्र यानि जन्म कुंडली। यह चार्ट विभिन्न राशियों में ग्रहों की स्थिति को दर्शाता है। कुंडली का रहस्य यह है कि यह कोई निश्चित भाग्य नहीं, बल्कि तर्क और सम्भावनाओं का एक गतिशील मानचित्र है। कुंडली जीवन के चक्रों और चरणों, ग्रहों के गोचर और प्रगति, और ग्रहों की दशा और दिशा को भी दर्शाती है, जो आत्म-जागरूकता और आत्म-सुधार के लिए एक उपकरण है। वास्तु का रहस्य यह है कि यह नियमों का कोई कठोर समूह नहीं है, बल्कि सिद्धांतों और दिशानिर्देशों की एक प्रणाली है। ज्योतिष का एक हिस्सा, जो भवन निर्माण से संबंध रखता है, वास्तु शास्त्र के नाम से जाना जाता है। ज्योतिष और वास्तु दोनों का एक साथ प्रयोग एवं उपयोग शत-प्रतिशत सफलता दिलाता है। जीवन के हर क्षेत्र में ज्योतिष का महत्व है उसी प्रकार भवन निर्माण या कोई भी निर्माण कार्य ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर ही प्रारम्भ करना शुभ होता है। जब हम अपनी मेहनत और परिश्रम से अपनी स्वयं की आय से घर मकान बनाते है तो उसके लिए हमारी जन्म पत्रिका का चतुर्थ भाव बली होना जरुरी है, चतुर्थ भाव के स्वामी को बली और शुभ होना चाहिए, चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह होने चाहिए, शुभ ग्रहों की दृष्टि होनी चाहिए। व्यक्ति को सर्वप्रथम अपनी कुण्डली में ग्रहों की स्थिति को देखना चाहिए। उसकी कुण्डली में यदि कोई ग्रह दोष हो और वह बाधा उत्पन्न करने वाला हो, तो सबसे पहले उसका निदान करना चाहिए।

सामग्री और विधी

मनुष्य जिस समय पृथ्वी पर जन्म लेता है, उस समय आकाश-मण्डल में विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसका प्रभाव जातक के जीवन को निरन्तर प्रभावित करते रहता है। जन्म कुण्डली जातक के जन्म-समय में विभिन्न ग्रहों की स्थिति की ही परिचायक होती है। ज्योतिष-शास्त्र के विभिन्न अंगों में गणित तथा फलित का स्थान मुख्य है। कुंडली को १२ (बारह) भागों में विभाजित किया गया है। इन्हें स्थान या भाव कहा जाता है। यह चित्र पूर्ण आकाश दृश्य है। निवास बनाने की विद्या को वास्तुविद्या कहते हैं। और वास्तुविद्या को ही वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र तथा स्थापत्यवेद भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Architecture कहा जाता है। पुराणों में जैसे की, अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, नारदपुराण आदि में भवन- निर्माण या वास्तुशास्त्र की विद्या बड़ी सूक्ष्मता तथा स्पष्टता के साथ वर्णित है। इस प्रकार अत्यन्त प्राचीनकाल से ही भारत में वास्तुशास्त्र का ज्ञान प्रचलित रहा है। गृह की प्राप्ति पुण्यों के फलस्वरूप होती है यह बात भी इन ग्रंथो में कही गयी है। इसी प्रकार वास्तोष्पति का भी उल्लेख किया गया है- "भोजस्येदं पुष्करिणीव वेश्म परिष्कृतं देवमानेव चित्रम्॥" - (ऋग्वेद 10।107।10)

निष्कर्ष

वास्तु और ज्योतिष में अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। एक तरह से दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों के बीच के इस संबंध को समझने के लिए वास्तु चक्र और ज्योतिष को जानना आवश्यक होता है। किसी जातक की जन्मकुंडली के विश्लेषण में उसके भवन या घर का वास्तु सहायक हो सकता है। उसी प्रकार किसी व्यक्ति के घर के वास्तु के विश्लेषण में उसकी जन्मकुंडली सहायक हो सकती है। ज्योतिष और वास्तु दोनों का एक साथ प्रयोग एवं उपयोग शत-प्रतिशत सफलता दिलाता है। दोनों ही शास्त्रों में विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए अपने-अपने तरीके से ब्रह्माण्डीय उर्जाओं के नकारात्मक प्रवाह को सकारात्मक प्रवाह में परिवर्तित किया जाता है | जीवन के हर क्षेत्र में ज्योतिष का महत्व है उसी प्रकार भवन निर्माण या कोई भी निर्माण कार्य ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर ही प्रारम्भ करना शुभ होता है।

संदर्भ सूची

1. भृगुसंहिता फलित-दर्पण फलित-प्रकाश ग्रन्थ के मुल लेखक भृगु ऋषि है।

2. जातक मंथन - लेखक- श्री मनोहर गो. प्रधान
3. गृहिणी-जातक - लेखक- श्री द्वारकानाथ ना. राजे
4. जातक रहस्य - लेखक- श्री द्वारकानाथ ना. राजे
5. राशीचक्र - लेखक- श्री शरद उपाध्ये
6. कृष्णमूर्ती ज्योतिष रहस्य - लेखक - श्री सुरेश शहासने
7. सुगम फलित ज्योतिष - लेखक- डॉ. विष्णु शर्मा
8. सुबोध भृगुसंहिता - लेखक- श्री केशव भिकाजी ढवले
9. विश्वकर्मा प्रकाश - लेखक- महर्षि अभय कात्यायन
10. वास्तुरविराज - लेखक – डॉ. रविराज अहिरराव
11. वास्तुमंथन - लेखक- श्री बबनराव पाटिल
12. मयमतम - हिंदी अनुवाद- डॉ. श्रीमती शैलजा पाण्डेय
13. शिवस्वरोदयशास्त्र लेखक- प.पू. अण्णासाहेब मोरे (यह किताब पंचामृत नाम से प्रसिद्ध है)